Rural Studies (RM&D)
Patna University
Semester-I

Indian Rural Society & Rural Administration

Course/ Paper Code:-CC-1 Unit-5- Panchayati Raj

(E-content)

Dr. Shashi Gupta
Assistant Professor (Guest Faculty)
P.G. Department of Rural Studies (RM&D)
Patna University
Mobile No.:9472240600
Email: drsgupta01@gmail.com

आर्थिक विकास में उद्यमी की भूमिका
(Role of an Entrepreneur in Economic Growth)

किसी देश के आर्थिक विकास में उद्यमी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह बिखरे हुए प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों को एकत्रित करता है। नवाचार के द्वारा उनका कुशलतम उपयोग करता है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में रोजगार के संसाधनों का निर्माण करके लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है। सामाजिक स्थायीत्व लाता है। पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना करके उद्योगों का संतुलित क्षेत्रीय विकास करता है। उत्तम एवं शेष उत्पादन करके निर्यात में वृद्धि करता है। विदेशी बाजारों में प्रतियोगिता का सामना करने के लिए उद्यमी नवाचार द्वारा न्यूनतम लागत पर विदेशी वस्तुओं से अधिक श्रेष्ठ एवं उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करके आयातो में पर्याप्त कमी लाता है जिसके परिणामस्वरूप आयात प्रतिस्थापन होता है और इसके कारण देश की बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत होती है। उद्यमी आवश्यकता से अधिक उत्पादन करके उक्त आधिक्य का निर्यात करता है जिससे देश को बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इस प्रकार आर्थिक विकास में उद्यमी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आर्थिक विकास से तात्पर्य ऐसी प्रक्रिया से है जिसके द्वारा किसी देश की प्रति व्यक्ति आय और कुल आय एक निश्चित समय में बढ़ती है। किसी देश की औद्योगिकीकरण तथा आर्थिक विकास की प्रक्रिया में उद्यमी उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं। वर्तमान युग में उद्यमी को आर्थिक विकास का कर्णधार माना जाता है। उद्यमियों की क्रियाओं के द्वारा किसी देश के आर्थिक विकास का चक्र गतिमान होता है। उद्यमी प्रत्येक अर्थव्यवस्था में मुख्य कार्यकर्ता होता है क्योंकि अर्थव्यवस्था की गाड़ी उसके बिना आगे नहीं चल सकती है। किसी देश के प्राकृतिक, आर्थिक, माननीय एवं तकनीकी संसाधनों को एकत्रित करके उनका देश के आर्थिक विकास में विदोहन करता है। उद्यमी आर्थिक विकास में नवाचार द्वारा निम्न तरीकों से योगदान देता है : -

रोजगार के अवसरों के सृजन में भूमिका (Role in Generation of Employment):-
आधुनिक युग की सबसे गंभीर समस्या निरंतर बढ़ती हुई बेरोजगारी, विशेषकर शिक्षित बेरोजगारी है जिसने आज विश्वव्यापी रूप धारण कर लिया है। अल्पविकसित एवं विकासशील देशों में तो यह अनेक आर्थिक समस्याओं, जैसे – निर्धनता, अज्ञानता, प्रभाव, बीमारी, सामाजिक कुंठा, नैराश्य, आक्रोश, जघन्य अपराध, निम्न जीवन स्तर, भुखमरी एवं आर्थिक अपराध देखने को मिलती है। बेरोजगारी से आशय ऐसी स्थिति से है जिससे व्यक्ति वर्तमान मजदूरी दर पर काम करने को तत्पर है किन्तु उसे काम नहीं मिलता हैं। भारत में विद्यमान रोजगार अवसर मुश्किल से 5 से लेकर 10% तक बरोजगारों को ही रोजगार प्रदान करने में समर्थ है। यह अन्तर निरंतर बढ़ता जाता है जिसके कारण बेरोजगारी की समस्या दिनों -दिन गंभीर रूप धारण करती जा रही है। हमारे देश में प्रतिवर्ष बढ़ती हुई बेरोजगारी की समस्या से ना केवल राष्ट्रीय तत्रं को हिला दिया है बल्कि हमारी नियोजित विकास की प्रक्रिया पर भी एक प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। यदि इस समस्या के निवारण में तुरंत उपयुक्त कदम नहीं उठाए गए तो वह दिन दूर नहीं जब देश का समूचा ताना-बाना ही संकट की स्थिति में आ जाएगा और देश की स्वतंत्रता को खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

उद्यमिता बेरोजगारी की समस्या के निवारण का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि एक सरकार विभिन्न विभागों में 100 जॉब का सृजन करती है अर्थात् उपलब्ध कराती है। इनमें 100 बेरोजगारों को ही रोजगार मिलता है जो कि 30-40 वर्ष रोजगार में रहते हैं। तत्पश्चात वे अवकाश ग्रहण कर लेते हैं और इस प्रकार जॉब पुनः रिक्त हो जाती हैं। जिन पर नए आवेदकों की नियुक्ति हो जाती है। इस प्रकार नए आवेदकों को नियुक्त करने का क्रम निरंतर चलता रहता है। यदि ये ही 100 व्यक्ति उद्यमी बन जाए तो वे न केवल स्वयं के लिए रोजगार उपलब्ध करने में समर्थ होंगे बल्कि और भी सैकड़ों बेरोजगारों को रोजगार प्रदान कर सकेंगे, जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जाएगा अपने कारोबार में उसका विकास करके प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूप में अधिकाधिक लोगों को

रोजगार देने में समर्थ होंगे। इस दृष्टि से उद्यमिता बेरोजगारी के समस्या का सामना करने एवं उनका निवारण करने का सर्वश्रेष्ठ हैं।

रोजगार का निर्माण (Generation of Employment): - उद्यमिता प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार का निर्माण करती है। प्रत्यक्ष रूप से यह व्यक्तियों में कार्य करने के लिए इच्छा उत्पन्न करती है और अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी और छोटी व्यवसायिक इकाइयों की स्थापना द्वारा लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करती है। इस प्रकार उद्यमिता देश की बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने में अत्यंत सहायक है।

देश की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि (Increase Per Capita Income): - एक उद्यमी सदैव नए नए व्यावसायिक अवसरों की खोज में रहता है। एक उद्यमी निष्क्रिय पड़ी हुई भूमि, श्रम, पूंजी, संगठन एवं साहस को राष्ट्रीय आय के रूप में परिवर्तित करता है जो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के रूप में परिलक्षित होती हैं।

पूँजी निर्माण में सहायक (Assists in Capital Formation) :- उद्यमी देश में छोटी-छोटी मात्रा में इधर-उधर बिखरी हुई पूंजी को एकत्रित करके उसे जन निक्षेप एंव प्रतिभूतियों के रूप में व्यवसाय मे विनियोजित करता है । जन निक्षेपों का किसी उद्यम में निवेश होने से देश के संसाधनों का कुशलतम उपयोग होता है एवं निर्माण की गति में वृद्धि होती है जोकि किसी देश के आर्थिक विकास में तेजी से वृद्धि करने के लिए नितांत आवश्यक है। इस प्रकार एक उद्यमी पूंजी निर्माणकर्ता होता है न कि पूंजी का संचय कर्ता।

संतुलित क्षेत्रीय विकास (Balanced Regional Development): - उद्यमिता सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के विकास द्वारा देश में आर्थिक विकास की विषमताओं को कम करती है। उद्यमी पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना करके राज्य सरकार एंव केन्दीय सरकार द्वारा प्रदान की गई सहायता प्राप्त करते हैं। ऐसे कई उदाहाण देखने को मिलते हैं कि राजकीय सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने से ही देश की बड़ी-बड़ी उद्यमियों ने अपनी फैक्ट्रियां ऐसे स्थानों पर लगाई है जो काफी पिछड़ा हुआ था।

जीवन स्तर में सुधार (Improvement of Living Standards): - एक उद्यमी व्यवसाय की स्थापना कर आवश्यक वस्तुओं की कमी को दूर करने का प्रयास करता है और बाजार में नए एवं उत्तम किस्म के उत्पादों की पूर्ति करता है। उद्यमिता लघु उद्योगों की सहायता से एक आम आदमी के जीवन स्तर में वृद्धि करती हैं। उद्यमी न्यूनतम लागत पर उपभोक्ता के उपयोग के लिए विभिन्न वस्तुएं उत्पन्न करते है।

आर्थिक स्वतंत्रता (Economic Development): - उद्यमिता किसी देश की आथिक स्वतंत्रता के लिए एक बहुत ही आवश्यक तत्व है। उद्यमी देश में विदेशी उत्पादों से उत्तम किस्म का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। विदेशी बाजारों से प्रतियोगिता का सामना करने के लिए उद्यमी न्यूनतम लागत पर विदेशी वस्तुओं से अधिक उपयोगी वस्तुएं बनाने की कोशिश करता है जिसके फलस्वरूप देश को बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत होती है। यही उद्यमी आवश्यकता से अधिक उत्पादन करके उसे निर्यात भी करता है जिससे देश को बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। यही निर्यात संवर्धन देश को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

सृजनात्मक शक्ति और नवाचार (Creativity and Innovation): - सृजनात्मक शक्ति नवाचार की प्राथमिक आवश्यकता है। यह एक अद्भुत प्रक्रिया है जिसका निष्पादन तेज मस्तिष्क द्वारा ही संभव होता है। बिना सृजनात्मक शक्ति के आर्थिक विकास संभव नहीं है। सृजनात्मक शक्ति

नवीनता लाने की योग्यता है। नवाचार भी किसी नवीनता को लाने की प्रक्रिया है। सृजनाआत्मक शक्ति और नवाचार में मूल अंतर यह है कि जहां एक और सृजनात्मक शक्ति योग्यता के धारण से संबंधित है, वहीं दूसरी ओर नवाचार नये कार्य को करने से संबंधित है। सृजनात्मक शक्ति का तब तक कोई मूल्य नहीं होता जब तक कि उसे उपयोगी उत्पादों और सेवाओं में परिवर्तित ना कर दिया जाए। यह कार्य नवाचार द्वारा संपन्न होता है। इस दृष्टि से सृजनात्मक शक्ति नवाचार की प्राथमिक आवश्यकता हुई। इस प्रकार नवाचार सृजनात्मक शक्ति का उपयोग करता है जिसके कारण किसी देश का आर्थिक विकास संभव होता है।

नवाचार को प्रोत्साहन (Promotion of Innovation) : - उद्यमी शोध एवं अनुसंधान पर अत्यधिक बल देकर समाज में नवाचार को प्रोत्साहित करता है। उद्यमी ही उद्योग में नयी-नयी वस्तुओं के उत्पादन, नवीन उत्पादन विधियों, नये यंत्र, नए कच्चे माल, नयी तकनीक, नये उद्योगों आदि को प्रोत्साहित करता है। परिवर्तन का जोखिम उठाकर भी वह समाज में नये-नये परिवर्तनों व नवाचारों को प्रोत्साहित करता है।

नवीन व्यवसाय एवं उद्योगो की स्थापना का एंव विस्तार (Establishment and Expansion of New Business and Industries) :- उद्यमी के कारण ही समाज में नए-नए व्यवसायों एवं उद्योगों की स्थापना होती है। उद्यमी उत्पत्ति के साधनों को उत्पादक कार्यों की ओर प्रस्तुत करता है। और उद्यम का विस्तार करके विकास की गति को बढ़ाता है। उद्यमी के नेतृत्व के विना सभी साधन निष्क्रिय बने रहते हैं। किसी व्यवसाय एवं उद्योग की स्थापना का निर्णय अत्यंत जोखिमपूर्ण एवं कार्य होता है। पल-पल पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में एक उद्यमी व्यवसाय एंव उद्योग की स्थापना के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए नवाचार का प्रयोग करते हुए एक विवेकपूर्ण योजना बनाता है। इसके लिए उद्यमी में विभिन्न व्यक्तिगत गुणों जैसे –दूरदर्शिता, कल्पना शक्ति, अदम्य साहस, उत्साह, धैर्य आदि के साथ-साथ तकनीकी एवं युद्धनीतिक ज्ञान भी होना आवश्यक है। किसी भी नवीन व्यवसाय एंव उद्योग की स्थापना करने एवं उसे प्रारंभ करने तथा व्यावसायिक अवसरों की खोज से लेकर उत्पादन प्रारंभ करने तक उद्यमी को विभिन्न क्रियाएं संपन्न करनी पड़ती है। नवाचार के माध्यम से उद्यमी न केवल विभिन्न क्रियाओं को संपन्न करके व्यवसाय एवं उद्योग की स्थापना ही करता है अपितु व्यवसाय का विस्तार भी करता है जिसके परिणामस्वरूप अधिकाधिक बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध होता है।

निर्यात संवर्धन और आयात प्रतिस्थापन में योगदान (Role in Export Promoion and Import Substitution):- निर्यात संवर्धन में किसी देश में उत्पादित उत्पादों एवं सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है। उत्पादों एवं सेवाओं का निर्माण देश में उनका उपभोग करने एवं निर्यात करने के लिए होता है। जनसंख्या में वृद्धि एवं जीवन स्तर ऊंचा उठाने से घरेलू मांग में वृद्धि होती है। नवाचार के माध्यम से उत्पाद मात्रा एवं किस्म में सुधार होने से विदेशों में भी उनकी मांग बढ़ती है। इस निरंतर बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए उत्पादन की मात्रा में वृद्धि करनी पड़ती है जिसके कारण अधिकाधिक उद्यमियों की आवश्यकता पड़ती है। उद्यमी सैकड़ों एवं लाखों की संख्या में बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराते हैं ।

वर्तमान में भारत में आयात प्रतिस्थापन की प्रगति पर्याप्त संतोषजनक है। हमारी उद्यमी उन वस्तुओं को के निर्माण पर विशेष बल दे रहे हैं जिनका आयात विदेशों से किया जाता था। इस दिशा में हमें विदेशी उद्यमियों का भी सहयोग मिल रहा है। वे भारत के उद्यमियों की साझेदारी में उन वस्तुओं के उद्योग स्थापित कर रहे हैं जिनका वे पहले भारत को निर्यात करते थे। उनका देश में उत्पादन होने से न केवल हमारे देश की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी बल्कि विदेश को भी उन का निर्यात किया जा सकेगा।